श्रीनन्दन शास्त्री

कवि श्रीनन्दन शास्त्री के जनम मुँगेर जिला के नंदनामा गाँव में अगस्त 1914 में होल हल। अब ई लखीसराय जिला में हे। क्रान्तिकारी होवे के चलते ई देस के अजाद करावेला अँग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लड़लन । इनकर कविता में समाजिक चित्रन के साथ-साथ यथार्थ के चित्रन भी मिलऽ हे। इनकर कविता में लोक मंगल आउ विस्व-बंधुत्व के भावना हे। 1938 में हिन्दी कविता संगरह **'क्रांति के भट्ठी'**, 1939 में **'क्रांति के बिगुल'**, 1941 में **'किसान पुकार'** छपल। 1946 में मगही कविता संगरह **'अप्पन गीत'** परकासित भेल। 1959 से 1965 तक ई डिग्री कॉलेज लखीसराय मुँगेर में हिन्दी प्रवक्ता बनलन।

ई कविता में अकाल के भयावह दिरीस देखावल गेल हे। जीव-जंतु, पसु-पंछी, खेत-बधार सब के जिनगी संकट में फँसल हे । तरह-तरह के बिम्ब-प्रतीक के माध्यम से जे चित्रन कयल गेल हे, ऊ दिल-दिमाग के झकझोर देहे।

महाअकाल-गीत

भींजल हौ सखि, मोर अँखिया !!
गरदा से लेटल अकास हौ, तरेगना उदास हौ
भींजल हौ सखि, मोर अँखिया
आगे, अदरोके बदरा कठोर, सुनौ नै कुछ मोर
मानौ नै सखि मोर बतिया

[1]

बड़-बड़ टिल्हवन के पगड़ि उजड़ि गैलौ
अरियन के जरि गेलौ माँग गे
जुलुमी दुसासनो से सावन के जुलुम जादा
नगन होइतो अब भैया गांग गे
नदियन नहरियन कियारी; उघारे बिना साड़ी

देखलौ नाहि जाहौ अँखिया
गरदा.....

[2]

ऊँचे-ऊँचे पहड़न के कंधवन झूमेवाली
गछियन नगन बिना पात गे
गछियन के देहिया में सती जैसन लिपटल
लतिया जरलौ संगे साथ गे
विकल हौ हरिनियाँ समाज हौ पियासल आज
देखैतै सखिया फाटौ छतिया
गरदा.....

[3]

पानी बिना बगियन कोयलियन के कंठ बंद
मोरनी के मुरझन हौ पाँख गे
सुखल तलैयन में अभागिनी पुरैनियन के
सुखि गैलौ लाले-लाले आँख गे
दादुर के दुनिया उजार भैलौ, मछली संहार भैलौ
बंद भैलौ झिंगुर गितिया
गरदा.....

[4]

आववा के देह जैसन धरती के देह धीपल
दगनी के देहिया सन राह गे
इंजन के भाफ जैसन ऊ छक-छक लागे सखि
बगिया के हौंकल बयार गे
तैयो न हिम्मत हटावै हलियो
गँदौरा उठावै हलिओ
भरि-भरि माथे खँचिया
गरदा.....

[5]

हल आउ कुदाली लेले, माथे से बिड़रिया के
मँगिया सजौलिऔ दिन-रात गे
अँखियन के मोती नित अँचरा पै झारै हलिओ
देखेले तनिक बरसात गे
जखराज दुधवा चढ़ावै हलिऔ
काली मनावै हलिऔ
बाँधि-बाँधि कारी पठिया
गरदा.....

[6]

एकतो बैरिन सखि, सूरज के आगि हलौ
दूसरे तरेगन भरल रात गे
तीसर बैरिन ऐलौ ई सावनी पुरवैया सखि
छिनैलै कटोरवा के भात गे
कानैतै बुतरू मनावै पड़तौ
भूखलै सुतावै पड़तौ
कहि-कहि झूठ बतिया
गरदा.....

[7]

सुरसा के मुँह जैसन, करजा के मुँह होइतै
पहड़ो से भारी परिवार गे
छने-छने मथवा में एटम के फोट होइतै
देखि-देखि बेटिया कुमार गे
गौंढ़ा खेत हटावै पड़तौ
जेबर भेजावे पड़तौ
बेचे पड़तौ लोटा-थरिया
गरदा.....

[8]

कंठ में प्यास हौ सखि,
पेट-कंठ में भूख हौ बसल
घर-घर बसल हाहाकार गे
खेतवा के छतिया पर
भीसन अकाल हौ बसल
कुइआँ के पेट में दरार गे
जीवन राह अँधार हौ बसल
आँखि बाढ़ हौ बसल
मथवा पर साढ़े सतिया
गरदा.....

[9]

केकरा देखैओ सखि अप्पन दुर्गतिया ई
सुनतौ के बिपतल के हाँक गे
दुनिया के आँख एखन पत्थल के आँख सखि
कान दूनो भीत के सुराख गे
ऐलौ समैया बिनास के सखि
लिखिऔ कौन बतिया !
गरदा.....

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) अकाल केकरा कहल जाहे ?

(ख) पानी के बिना केकर-केकर हालत खराब हे ?

(ग) करजा के मुँह केकरा लेखा बतावल गेल हे ?

(घ) जेबर काहे भेजावे पड़तै ?

(ग) 'आँख में बाढ़ बसल हे' के मतलब का हे ?

लिखित :

1. 'महाअकाल-गीत' के पहिला पद में कवि कउन चीज के बरनन कइलक हे ?
2. महाअकाल के समय परकिरती के दिरिस कइसन हो जा हे ?
3. महाअकाल गीत के तीसरा पद में जउन पीड़ा आउ टीस के बतावल गेल हे ओकरा अप्पन भासा में लिखऽ ।
4. चौथा पद में धरती आउ जीव जंतु के स्थिति कइसन हो जाहे ?
5. अकाल पड़ला पर किसान के आँगू कउन दुख-दरद उपस्थित हो जाहे ?
6. कवि छट्ठा पद में केकरा-केकरा बैरिन बतउलक हे ?
7. सतवाँ पद के मोताबिक कवि अकाल के कउन रूप बतउलक हे ?
8. कंठ में पियास, पेट में भूख, घर में हहाकार, राह में अन्हार, आँख में बाढ़ के भाव समझावऽ ।
9. कवि अकाल के विनास के रूप में काहे बतउलक हे ?.
11. पद में आयल सिल्प-सौन्दर्य के बरनन करऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. (क) कविता में कवि कउन छंद आउ अलंकार के परयोग भेलक हे ?

   (ख) कवि के बिम्ब आउ प्रतीक से तू कहाँ तक सहमत हऽ ?
2. (ञ) 'गछियन के देहिया में सती जैसन लिपटल लतिया जरलौ संगे साथ गे' ई पंक्ति के माध्यम से कवि का कहेला चाह रहल हे ? आज ई परथा काहे न हे ?

   (ख) अकाल पर एगो दोसर कविता सुनावऽ।

सब्दार्थ :

लेटल	—	गंदा
गरदा	—	धूरी
अदरोके	—	अदरा नछत्तर
जुलुमी	—	अत्याचारी

संहार — नास

धीपल — तातल

विकल — बेयाकुल

खँचिया — मउनी, टोकरी

गौंढ़ा — गाँव के नगीच खेत

●●●